•BUILDING SKILLS•BUILDING FUTURE•

डिजाइन और फैशन के अवयव

व्यावहारिक पुस्तिका

व्यावहारिक अभ्यास

कुल अंक 100
(सिद्धांत 50+प्रयोग 50)

व्यावहारिक अभ्यासों का उद्देश्य छात्रों को अनुप्रयोग आधारित कार्यों के माध्यम से पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु के सैद्धांतिक अवयव की उनकी समझ का प्रदर्शन करने में समर्थ बनाना है। प्रत्येक इकाई में 5 अभ्यास हैं जिनमें प्रत्येक के उद्देश्यों, सामग्रियों, टिप्पणी और चर्चा द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया के बारे में भी वर्णन किया गया है।

इकाई I: डिजाइन का परिचय

1. रंग चक्र
2. अवर्णक और एकवर्णक रंग योजनाएं
3. तंतु–विन्यास
4. क्रोकी पर स्टाइल लाइनों को रखना
5. फैशन की मुद्राएं और अनुपात

इकाई II: फैशन का इतिहास

6. जेटगेस्ट को पहचानना
7. फैशन पर सुविख्यात व्यक्तियों का प्रभाव
8. पहचान के रूप में शरीर श्रृंगार
9. ड्रेप्ड परिधान
10. ज्ञान के स्रोत के रूप में संग्रहालय

इकाई III: आधुनिक फैशन का उद्भव

11. औद्योगिक क्रांति का प्रभाव
12. समकालीन परिधानों पर युद्ध पोशाकों का प्रभाव
13. डिजाइनर के सिगनेचर शैलियों की पहचान
14. पारंपरिक भारतीय परिधानों के लिए प्रेरणा के रूप में ऐतिहासिक पोशाकें
15. पोशाकों के लिए ऐतिहासिक संदर्भ के स्रोत के रूप में फिल्में

इकाई IV: फैशन का इतिहास

16. ट्रेंड सूचना के स्रोत के रूप में प्रिंट मीडिया
17. फैशन चक्र
18. ट्रेंडों को समझने के लिए क्षेत्रीय दौरे
19. फैशन पूर्वानुमान के अवयव के रूप में पेंडुलम
20. कला, शिल्प और डिजाइन

कला सामग्रियों की सूची

I. ड्राइंग बोर्ड – हाफ इम्पीरियल

II. कागज

- i. कार्ट्रिज
- ii. सनलिट बोर्ड
- iii. आइवरी पेपर
- iv. ट्रेसिंग पेपर / गेटवे ट्रेसिंग पेपर
- v. बटर पेपर

III. लेखन सामग्री

- i. ग्रेफाइट पेंसिलें – एचबी, बी, 2बी
- ii. क्लच पेंसिल – 1
- iii. रबर (मध्यम आकार) – 6
- iv. प्लास्टिक रूलर – 12″ और 24″
- v. प्लास्टिक रूलर – 12″ और 24″
- vi. काला पेन – पतली निब वाला

IV. विविध सामग्री

- i. स्केच टेप – 1
- ii. मास्किंग टेप / सेलो टेप – 1
- iii. स्टेपलर – 1
- iv. कैंची – मध्यम आकार
- v. ड्राइंग बोर्ड क्लिपें – 4
- vi. पिनें – थम्ब पिन, जेम क्लिप्स, ऑल पिन्स
- vii. ग्लू

V. कला सामग्री

- i. पोस्टर कलर – 12 का डिब्बा
- ii. काली वाटरप्रूफ स्याही – 1 बोतल
- iii. रंगीन पेंसिलें – 12 रंगों का सेट
- iv. कलर मार्कर पेन – 12 रंगों का सेट

VI. ब्रश

i. गोल वाटर कलर ब्रश – साइज सं. 2, 4, 8 (1 प्रत्येक)

ii. समतल वाटर कलर ब्रश – साइज सं. 3, 5 (1 प्रत्येक)

VI. पैलेट (रंग मिश्रित करने के लिए)

VII. वाटर कन्टेनर

i. सीरेमिक मग अथवा ग्लास – 1

IX. स्केच बुक – 11'' **x** 14''

X. पोर्टफोलियो केस – हाफ इंपीरियल साइज

XI. एप्रन 1 (व्यावहारिक अभ्यासों के दौरान विद्यालय की वर्दी को रंगों से बचाने के लिए)

कागज के आकार (संदर्भ के लिए)

आकार	इंच	
ए1	23.4 **x** 33.1	फुल इंपीरियल
ए2	16.5 **x** 23.4	½ इंपीरियल
ए3	11.7 **x** 16.5	¼ इंपीरियल
ए4	8.3 **x** 11.7	

इकाई I.

व्यावहारिक अभ्यास 1

उद्देश्यः

1. छात्रों को रंग चक्र तथा बुनियादी रंग योजना – प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक की उनकी समझ को प्रयोग में लाने में समर्थ बनाना
2. पोस्टर कलरों के सपाट प्रयोग में कौशल विकसित करना

अपेक्षित सामग्रीः

1. एक सफेद कार्ट्रिज शीट (आकार ए3)
2. पोस्टर पेंट, ब्रश, पैलेट, ज्यामिती कम्पास, पेंसिल, रूरल, कैंची, पानी का पात्र।

कार्य विधि :

1. पाठ्यपुस्तक में रंग चक्र (चित्र 1.25) का अवलोकन करें।
2. निम्नलिखित प्राथमिक रंगों की शीशियां खोलेंः
   - **i.** पोस्टर रेड (लाल)
   - **ii.** कोबाल्ट ब्लू (नीला)
   - **iii.** लैमन येलो (पीला)
3. शीर्ष पर तैर रहे किसी भी प्रकार के तेल को बाहर उड़ेल दें।
4. शीशियों में से रंग पैलेट पर निकाल लें। प्रत्येक प्रयोग के बाद ब्रश को धो लें ताकि रंग एक–दूसरे से मिलने न पाएं। प्रत्येक में अलग–अलग पानी मिलाएं जब तक कि एक मध्यम सामजंस्य प्राप्त न कर लिया जाए।
5. इन प्राथमिक रंगों को 2'' **x** 2'' वर्ग के भीतर एक कार्ट्रिज पेपर पर वर्टिकल स्ट्रोकों से लगाएं तथा इनके सूखने से पूर्व पुनः क्षैतिज स्ट्रोकों से लगाएं। सुनिश्चित करें कि जब रंग सूख जाए तो वहां पर धब्बे से न पड़े हों।
6. माध्यमिक रंगों का सृजन करने के लिए इस प्रक्रिया को निम्नलिखित अनुपातों में दोहराएंः
   - **i.** संतरी : 50 प्रतिशत लाल और 50 प्रतिशत पीला
   - **ii.** हरा : 50 प्रतिशत नीला और 50 प्रतिशत पीला
   - **iii.** बैंगनी : 50 प्रतिशत नीला और 50 प्रतिशत लाल
7. तृतीयक रंगों का सृजन करने के लिए इस प्रक्रिया को निम्नलिखित अनुपातों में दोहराएंः
   - **I** लाल – संतरी : 50 प्रतिशत लाल और 50 प्रतिशत संतरी
   - **ii.** पीला – संतरी : 50 प्रतिशत संतरी और 50 प्रतिशत पीला
   - **iii.** पीला – हरा : 50 प्रतिशत पीला और 50 प्रतिशत हरा
   - **iv.** हरा – नीला – : 50 प्रतिशत हरा और 50 प्रतिशत नीला
   - **v.** जुम्बकी – नीला – : 50 प्रतिशत नीला और 50 प्रतिशत पर्पल
   - **vi.** बैंगनी : 50 प्रतिशत पर्पल और 50 प्रतिशत लाल
8. सूख जाने पर, प्रत्येक रंग के पंखानुमा टुकड़े काट लें।
9. वृत्त में रंग चक्र को काटने के लिए कम्पास का प्रयोग करें।
10. इसे कार्ट्रिज शीट पर लगाएं।

प्रेक्षण और चर्चाः

1. रंग का मिश्रण दूसरे रंगों को कैसे तैयार करता है।
2. अनुपातों में परिवर्तन होने से भिन्न–भिन्न क्षेत्रों के रंगों में अंतर कैसे आ गया।
3. रंगों के प्रयोग में साफ–सफाई कैसे बरती जाए।

व्यावहारिक अभ्यास 2

उद्देश्यः

1. छात्रों को अवर्णक और एक वर्णक रंग योजनाओं के माध्यम से वैल्यू स्केल की उनकी समझ को प्रयोग में लाने में उन्हें समर्थ बनाना
2. पोस्टर कलरों का नियंत्रण अनुप्रयोग तथा रंग मिश्रण को सीखना।

अपेक्षित सामग्री

1. एक सफेद कार्ट्रिज शीट (आकार ए3)
2. पोस्टर पेंट, ब्रश, पैलेट, ज्यामिती कम्पास, पेंसिल, रूरल, कैंची, जल–पात्र, आस्किंग टेप / स्टिकिंग टेप

कार्य विधि :

1. पाठ्यपुस्तक के अध्याय 1 में दी गई अवर्णन रंग योजना और एकवर्णक रंग योजना, दोनों का अवलोकन करें।
2. कोई एक प्राथमिक रंग चुनें।
3. विशुद्ध वर्णों में सफेद और काले को निरंतर मिलाने की उसी तकनीक का पालन करें जैसी अभ्यास 1 में दी गई है।
4. इन रंगों को 2'' **x** 2'' वर्ग के भीतर एक कार्ट्रिज पेपर पर लगाएं।
5. 3 बैंड का कलर स्केल तैयार करें जहां तीसरा वर्ग विशुद्ध वर्ग होगा।
   i. एक ओर टिंटसन सृजित करने के लिए निरंतर सफेद मिलाएं
   ii. दूसरी ओर शेड सृजित करने के लिए निरंतर काला मिलाएं
6. दो बैंडों को एक–दूसरे के समांतर चिपकाएं।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. किसी रंग में काला और सफेद रंग मिलाने से विशुद्ध वर्ण के टिंट्स और शेड कैसे उत्पन्न होते हैं।
2. रंगों को मिश्रित करने तथा कागज पर उनका प्रयोग करने के लिए आंखों–हाथों का सक्रिय समन्वय किस प्रकार विकसित करें।

व्यावहारिक अभ्यास 3

उद्देश्य:

1. तंतु–विन्यासों के विशेष संदर्भ में प्राकृतिक तथा मानव–निर्मित वस्तुओं की विशेषताओं से संबंधित प्रेक्षण क्षमता विकसित करना।
2. प्राकृतिक और मानव–निर्मित वस्तओं में से प्रत्येक के 5 तंतु–विन्यासों की प्रतिकृति तैयार करना।
3. आधारभूत प्रस्तुतीकरण तकनीकों को जानना।

अपेक्षित सामग्री :

1. सफेद कार्ट्रिज शीट (आकार ए2) – 5
2. सनलिट बांड शीट – 10
3. कलर पेंसिलें, वैक्स क्रेयांस, चॉक पेस्टल्स, ग्रेफाइड पेंसिल, रूलर, कैंची, ग्लू।

कार्य विधि :

1. आस–पास के परिवेश में तंतु–विन्यास की पहचान करें। प्रकृति में इन्हें फूलों, वृक्षों की छाल, पत्थरों, सीपियों, आदि में पाया जा सकता है। मानव–निर्मित तंतु–विन्यासों को जीवन–शैली उत्पादों, भवनों, वस्त्रों आदि में पाया जा सकता है।
2. किसी तंतु–विन्यासित वस्तु पर सनलिट बांड शीट को रखें।
3. 6'' **x** 6'' वर्ग के कागज पर पेंसिल/क्रेयान/चॉक पेस्टलों को रगड़ते हुए तंतु–विन्यास को अंतरित करें।
4. विभिन्न रंग योजनाओं का प्रयोग करते हुए विभिन्न प्रकार की कला सामग्री (पेंसिलों और क्रेयानों) के साथ तंतु–विन्यासों की प्रतिकृति का प्रयोग करें।
5. तंतु–विन्यासों को प्राकृतिक और मानव–निर्मित में श्रेणीबद्ध करें। उन्हें लेबल भी करें।
6. 6'' **x** 6'' वर्ग की ''विंडों'' के कट–आउटों में उन्हें नोटबुक में लगाएं।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. परिधानों तथा गृह साज–सज्जा की तस्वीरें और विज्ञापन ब्रांड की विशिष्ट सिगलेचर शैली के रूप में तंतु–विन्यासों और सतह उपचारों/कशीदाकारी पर किस प्रकार ध्यान केन्द्रित करते हैं।
2. उनके वास्तविक (स्पृश्य) और आशयित तंतु–विन्यास (परिकल्पित) किस प्रकार उत्पाद के सौंदर्यबोध के प्रति योगदान देते हैं।
3. वस्त्र की सतहें विभिन्न स्रोतों से किस प्रकार प्रेरित होती है।

व्यावहारिक अभ्यास 4

उद्देश्यः

1. क्रोकी का चित्रण करते हुए शैली–पंक्तियों के महत्व की समझ विकसित करना।

अपेक्षित सामग्री

1. सफेद कार्ट्रिज शीट (आकार ए3)
2. गेटवे ट्रेसिंग पेपर/ट्रेसिंग पेपर
3. क्लच पेंसिल, रबर, रूलर, कैंची, टेप।

कार्य विधि :

1. अभ्यास 1 में दी गई किसी भी क्रोकी का चयन करें।
2. एक ए3 आकार की कार्ट्रिज शीट पर उसकी फोटोप्रति चिपकाएं।
3. कार्ट्रिज शीट के ऊपर एक ट्रैसिंग पेपर लगाए (केवल शीर्ष पर टेप का प्रयोग करें तथा कागज को तीन ओर से स्वतंत्र रहने दें)।
4. निम्नलिखित शैली–पंक्तियों को सही–सही चिह्नित करते हुए संपूर्ण आकृति को ट्रेस करें:
   - **i**. केन्द्रीय अग्रिम पंक्ति
   - **ii**. प्रिंसेस सीम्स
   - **iii**. नेक लाइन
   - **iv**. आर्महोल्स
   - **v**. एक्रॉस बस्ट लाइन
   - **vi**. वेस्ट लाइन
   - **vii**. हिपलाइन (पूरे भाग में)
   - **viii**. क्रीज लाइन (जहां टांगे धड़ से जुड़ती हैं)
5. गर्दन से फर्श ऊर्ध्व प्लम्ब–लाइन (सुनिश्चित करें कि यह शीट के किनारे के समांतर हो)।
6. चेहरा और बाल बनाएं।
7. उसके पैरों में जूते बनाएं।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. फैशन उद्योग ने फैशन क्रोकियों की क्या भूमिका है?
2. क्रोकियों पर शैली–पंक्तियों को सटीक बैठाना क्यों महत्वपूर्ण है?

व्यावहारिक अभ्यास 5

उद्देश्य:

1. क्रोकी के फैशन अनुपातों की समझ विकसित करने के लिए छात्रों की सहायता करना।
2. ऐसी फैशन मुद्राओं को देखने तथा उनका चित्रण करने की योग्यता विकसित करना जो परिधान के लिए अत्यंत उपयुक्त हों।
3. किसी ड्राइंग बुक/स्केच फाइल में छात्रों को मुद्राओं का एक दृश्यमान 'बैंक' सृजित करने में समर्थ बनाना।

अपेक्षित सामग्री :

1. सफेद कार्ट्रिज शीट (आकार ए3) – 1
2. गेटवे ट्रेसिंग पेपर/ट्रेसिंग पेपर – 2
3. क्लच पेंसिल, कलर पेंसिल, वाटर कलर, रूलर, कैंची, ग्लू।
4. फैशन पत्रिकाओं के पुराने अंक – 1

कार्य विधि :

1. किसी पत्रिका से किसी फैशन मॉडल की सामने की मुद्रा में किसी तस्वीर का चयन करें। पाठ्यपुस्तक में उपलब्ध कराए गए क्रोकी टेम्पलेट्स का प्रयोग भी किया जा सकता है।
2. आयताकार में (रूपरेखा के रूप में नहीं) फोटोग्राफ को काट लें तथा ए3 शीट के मध्य में इसे चिपका लें।
3. इसके ऊपर गेटवे ट्रेसिंग पेपर लगाए (टेप को केवल शीर्ष पर लगाएं तथा पेपर को तीन ओर से स्वतंत्र छोड़ दें)।
4. शीट के मध्य में क्रोकी को ट्रेस करें।
5. इसके साथ–साथ, अपनी स्वयं की क्रोकी बनाने के लिए मुद्रा का प्रयोग करें। सफाई का ध्यान रखें।
6. शैली–पंक्तियों को सही–सही रखें (व्यावहारिक अभ्यास 4 के अनुदेशों का अवलोकन करें)।
7. क्रोकी पर अपनी पसंद के वस्त्रों को डिजाइन करें।
8. अपनी पसंद के रंग माध्यमों का प्रयोग करते हुए डिजाइन को रंग करें।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. क्रोकी पर अभ्यास करने से फैशन चित्रण में कौशलों के विकास में किस प्रकार सहायता मिलती है?
2. क्रोकी पर डिजाइन सृजित करने में क्या सुविधा होती है?

इकाई–II
व्यावहारिक अभ्यास 6

उद्देश्य:

1. फैशन पर 'समय की भावना' के प्रभावों को समझने में समर्थ बनाना।
2. वर्तमान उत्पाद श्रेणियों की परिधि में युगचेतना (जेटजीस्ट) की पहचान करना।

अपेक्षित सामग्री

1. बिना लाइनों वाली / खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. फैशन पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

1. ऐसी भारतीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं का अवलोकन करें जो फैशन संबंधी विषयों पर ध्यान केन्द्रित करती हैं, जैसे जीवन–शैली, वस्त्र, उपांग, डेकोर आदि जो समय के वर्तमान मुद्दों को दर्शाते हैं।
2. 2–3 पत्रिकाओं में शीर्षकों की समानता पर चर्चा कीजिए (अर्थात् विलासिता, रोमांच, शिल्प, प्रकृति, बजट के भीतर सृजनात्मक आदि)।
3. कोई एक शीर्षक चुनिए।
4. शीर्षक के अनुसार विभिन्न उत्पाद श्रेणियों के दृश्यों की पहचान कीजिए (अर्थात् कपड़े, उपांग, फर्नीचर, साज–सज्जा, वास्तुकला, परिवहन आदि)
5. निम्न के संदर्भ में शीर्षक का विश्लेषण कीजिए:
   - रंग (चमकीले, प्राकृतिक, तटस्थ, अवर्णक, एकवर्णक, सदृश्य, त्रिसंयुज)
   - सामग्री (प्राकृतिक, मानव–निर्मित)।
   - मूल्य (विलासितापूर्ण, सामान्य, निम्न बजट)।
   - रूपरेखा (भारतीय अंतर्राष्ट्रीय, विलासितापूर्ण, देहात–शैली)
6. विभिन्न पत्रिकाओं से ऐसी तस्वीरें काटें जो युगचेतना (जेटजीस्ट) दर्शाती है तथा उन्हें एक स्क्रैपबुक में चिपकाएं।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. भारत में सर्वत्र उपलब्ध फैशन पत्रिकाएं कौन सी हैं? उनमे ंसमान बातें क्या–क्या हैं? वे एक–दूसरे से अलग क्यों हैं?
2. विद्यमान जेटजीस्ट की पहचान पत्रिकाओं से किस प्रकार की जा सकती है?

व्यावहारिक अभ्यास 7

उद्देश्य:

1. फैशन में सुविख्यात व्यक्तित्वों के प्रभाव को समझना और उसका वर्णन करना।
2. उनकी वेश–भूषा की शैली का विश्लेषण करना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली / खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. फैशन पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

1. किसी भी क्षेत्र में (फिल्म, खेल, व्यवसाय, राजनीति, सामाजिक कार्यकर्ता, साहित्य अनुसंधान आदि) एक भारतीय विशिष्ट व्यक्ति की पहचान करें।
2. पत्रिकाओं / इंटरनेट का अवलोकन करें तथा उसके कैरियर के मार्ग का तथा उपलब्धियों की सूची बनाएं जिसने उसे सुविख्यात बनाया है।
3. विभिन्न अवसरों पर उसके वेशभूषा की शैली का विश्लेषण करें।
4. उसके द्वारा समर्थित जब वह विज्ञापनों में दिखाई पड़ता है, उत्पादों (अर्थात् फैशन, खाद्य–सामग्री, वाहन, मोबाइल) संगठन और / अथवा सामाजिक मुद्दों की सूची तैयार करें।
5. विश्लेषण करें कि जनसंख्या के किस भाग (अर्थात् युवा / वृद्ध पीढी, मध्य वर्ग / विशिष्ट वर्ग, आदि) में उसके अनुयायी / समर्थक / प्रशंसक हैं।
6. तस्वीरें एकत्र करें तथा उन्हें शिक्षक के लिए एक नोट बुक / शीट में चिपकाएं / कक्षा में इस जानकारी का वर्णन दें।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. कौन सी बात उस व्यक्ति को विशिष्ट बनाती है (उसका रूप–रंग, पोशाक की शैलियां, क्रियाकलाप, उपलब्धियां)?
2. क्या उस व्यक्ति की विशिष्ट हैसियत ने उत्पाद की बिक्री अथवा सामाजिक–आर्थिक कल्याण में वास्तव में योगदान किया है?
3. समाज में सकारात्मक अंतर पैदा करने के लिए विशिष्ट व्यक्तित्व की हैसियत का प्रयोग किस प्रकार किया जा सकता है?

व्यावहारिक अभ्यास 8

उद्देश्यः

1. छात्रों को कुछ समाजों में शरीर के श्रृंगार के उदाहरणों को पहचानने में समर्थ बनाना।
2. समकालीन संस्कृति में संशोधनों के साथ अथवा उनके बिना उनके जारी रहने का दृश्यमान रूप से पता लगाना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली/खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. पत्रिकाएं (जैसे राष्ट्रीय भूगोल संबंधी, फैशन पत्रिकाएं)।

कार्य विधि :

1. अपने अथवा किसी अन्य देश के जनजातीय समुदाय के बारे में पता लगाने के लिए पुस्तकों, पत्रिकाओं और इंटरनेट का अवलोकन करें।
2. विभिन्न शरीर सजावटों तथा शारीरिक श्रृंगारों की तस्वीरों का पता लगाएं जो इस समुदाय की संस्कृति की विशिष्टता का वर्णन करती है। इसमें कपड़े, उपांग, छेदना, गोदना, शरीर को रंगाना, चेहरे को रंगना आदि शामिल हो सकता है।
3. पत्रिकाओं का अवलोकन करें तथा उन तस्वीरों की पहचान करें जहां शरीर के मूलतः श्रृंगार और उसके समकालीन अनुकरण के बीच उल्लेखनीय समानताएं विद्यमान हैं।
4. इन तस्वीरों को काटें तथा उनके बीच अंतर/समानता दर्शाने के लिए उन्हें एक–दूसरे के सामने चिपकाएं।
5. इन तस्वीकरों को समुदाय, देश, अवधि, परिधान के प्रादेशिक नाम, उपांग, तकनीक, रीति–रिवाज (जहां लागू हो) आदि के बारे में जानकारी के साथ लेबल करें।
6. कक्षा के लिए एक संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण तैयार करें।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. समुदाय की संस्कृति के विशिष्ट दृश्यमान संकेतक क्या हैं?
2. वे तरीके क्या हैं जिनसे शरीर की सजावट और श्रृंगार समकालीन संस्कृति में रूपांतरण से गुजरता है?

व्यावहारिक अभ्यास 9

उद्देश्य:

1. वस्त्रों को काटने और सिलने के पुरोधा के रूप में प्राचीन पश्चिमी और एशियाई सभ्यताओं में लपेटे जाने वाले वस्त्रों के महत्व पर ध्यान केन्द्रित करना
2. छात्रों को इस बात को सीखने में समर्थ बनाना कि लपेटे जाने वाले वस्त्र प्रोटोटाइप तैयार करने के लिए दृश्यमान संदर्भों को रूपांतरित किस प्रकार किया जाता है।

अपेक्षित सामग्री :

1. लपेटे जाने वाली पोशाकों पर संदर्भ पुस्तकें।
2. लपेटे जाने के लिए मलमल का कपड़ा।

कार्य विधि :

1. ऐसे विशिष्ट सभ्यताओं (भारतीय अथवा पश्चिमी) की पहचान करें जहां लपेटे जाने वाले वस्त्रों को व्यापक रूप में पहना जाता था।
2. शिक्षक के साथ चर्चा करें कि ड्रेपिंग के विवरणों के समझने के लिए संदर्भों की व्याख्या किस प्रकार की जाए।
3. उन्हें आवंटित सभ्यता के अनुसार लपेटे जाने वाले वस्त्रों के चित्रों की पहचान करने के लिए पुस्तकों, पत्रिकाओं और इंटरनेट का अवलोकन करें।
4. वस्त्र को लपेटने की प्रक्रिया का चरण–दर–चरण रेखाचित्र बनाएं।
5. अपने कार्य को एक शीट / नोटबुक में प्रस्तुत करें।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. भारत में लपेटे जाने वाले वस्त्रों का उद्‌भव कैसे हुआ?
2. क्या ड्रेसों के विश्लेषण में संग्रहालय की मूर्तिकलाएं और तस्वीरों की सहायता का प्रयोग संदर्भ के रूप में किया जा सकता है?

व्यावहारिक अभ्यास 10

उद्देश्य:

1. किसी संग्रहालय का ज्ञान के स्रोत तथा संदर्भ के लिए सुस्पष्ट तथ्य के रूप में महत्व को प्रदर्शित करना।
2. छात्रों के लिए प्रयोगात्मक अधिगम के अवसर के रूप में किसी संग्रहालय का दौरान करना।
3. सामूहिक कार्य तथा समन्वय के महत्व को समझना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली/खाली स्केच बुक (ए3)।
2. पेन, पेंसिल।

कार्य विधि :

शिक्षक दौरे से पूर्व निम्नलिखित कार्य करेंगे:

1. विद्यालय के निकट किसी संग्रहालय की पहचान।
2. संग्रहालय के दौरे के उद्देश्यों के बारे में कक्षा को संक्षिप्त जानकारी देना।
3. कक्षा को समूहों में बांटना तथा प्रत्येक समूह के लिए एक समूह–नेता निर्धारित करना।
4. पाठ्यपुस्तकों, इंटरनेट अथवा अन्य संदर्शों से पहचान की गई अवधि के बारे में समूहों को पृष्ठाधार जानकारी का पता लगाने का उत्तरदायित्व सौंपना।

छात्रों का प्रत्येक दल निम्नलिखित कार्य करेगा:

1. एक भारतीय सभ्यता का चयन (अर्थात् मोहन जो–दारो, और हड़प्पा, मौर्य, गुप्ता, राजपूत, मुगल आदि)।
2. नागरिक पोशाकों अथवा युद्ध पोशाकों पर ध्यान केन्द्रित करें।
3. जबकि संग्रहालय का वास्तविक दौरा समस्त संग्रहण का अवलोकन करने का अवसर उपलब्ध कराएगा। दल चुनी गई सभ्यता के कला–विवरणों, वस्त्रों और कपड़ों के पृष्ठाधार विवरणों पर विशेष ध्यान प्रदान करेगा। इसमें शामिल होगा:–

   I. संक्षिप्त टिप्पणियां

   ii. तेजी से बनाए गए स्केच

   iii. विवरिणकाएं, यदि कोई है
4. जानकारी को व्यवस्थित रूप से पृष्ठभूमि/उद्भव, जीवनशैली, वस्त्र, उपांग, श्रृंगार आदि में संकलित करें।
5. इस जानकारी के बारे में कक्षा को अवगत कराएं।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. संदर्भ के स्रोत के रूप में संग्रहालय किस प्रकार महत्वपूर्ण है?
2. कक्षा में पढ़ाई करने के अलावा किसी संग्रहालय में वास्तविक रूप से देखने के अनुभव के क्या लाभ हैं?
3. कक्षा में साथियों के साथ ज्ञान की साझेदारी तथा अनुभव की साझेदारी सहयोगी अधिगम में किस प्रकार योगदान करती है।

इकाई–III

व्यावहारिक अभ्यास 11

उद्देश्यः

1. छात्रों को भारत में ब्रिटिश राज के दौरान औद्योगिक क्रांति के प्रभाव को समझने में समर्थ बनाना।

अपेक्षित सामग्री

1. बिना लाइनों वाली/खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. संदर्भ पुस्तकें, पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

1. उन वस्त्रों तथा परिधानों की विशिष्ट श्रेणियों की पहचान करे जो औद्योगिक क्रांति के दौरान भारतीय निर्यात पर आधारित थे।
2. अतिरिक्त जानकारी के लिए किसी संग्रहालय का दौरा करें (ऐच्छिक)।
3. निम्नलिखित को करने के लिए पुस्तकालयों में पुस्तकों, जर्नलों तथा इंटरनेट का अवलोकन करेंः
   I ब्रिटिश राज के दौरान भारतीय जुलाहों पर लागू प्रतिबंधकारी नियमों और विनियमों के प्रभाव पर लेख ढूंढे।
   ii. भारतीय वस्त्रों और प्रिंटों का प्रयोग करते हुए यूरोपीय परिधानों की तस्वीरें ढूंढे।
4. दृश्य सामग्री की फोटोप्रतियों का प्रयोग करें तथा उपयुक्त लेबलों के साथ उन्हें शीट/नोटबुक में चिपकाएं जिनमें उत्पाद (वस्त्र और परिधान) संदर्भ नाम (यदि कोई है) और वर्ष को दर्शाया गया हो।
5. इन्हें शिक्षक को प्रस्तुत करें। इसके अलावा, कक्षा में एक प्रस्तुतीकरण भी पेश करें।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. भारत में औद्योगिक क्रांति के अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रभाव क्या थे?
2. क्या पारंपरिक वस्त्र प्रिंटों तथा परिधान डिजाइनों का प्रयोग डिजाइनरों द्वारा अभी भी किया जा रहा है।

व्यावहारिक अभ्यास 12

उद्देश्यः

1. समकालीन परिधानों पर युद्ध पोशाकों के प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित करना।
2. युद्ध तथा युद्ध के वस्त्रों पर सूचना के स्रोत के रूप में पुस्तकों, संग्रहालय, अभिलेखागार और फिल्मों का प्रयोग करना सीखना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली/खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. पत्रिकाएं और पुस्तकें।

कार्य विधि :

1. पुस्तकालय में पुस्तकों और जर्नलों तथा इंटरनेट का अवलोकन करें तथा इसमें ऐसे किसी युद्ध पर ध्यान केन्द्रित करें जो 20वीं शताब्दी में लड़ा गया था।
2. दोनों सेनाओं द्वारा पहने जाने वाली वर्दियों पर लेख तथा चित्र ढूंढे।
3. सामग्री, सिलुएट, रंग, संरचनाओं आदि के संदर्भ में इन वर्दियों और उपांगों का विश्लेषण करें।
4. इस दृश्य सामग्री की फोटोप्रति तैयार करें तथा युद्ध एवं वर्ष/अवधि से संबंधित जानकारी के साथ उन्हें उपयुक्त रूप से लेबल करें।
5. समकालीन पत्रिकाओं से ऐसे दृश्यों का पता लगाएं जो युद्ध की वर्दियों से प्रेरित फैशन को दर्शाते हैं तथा डिजाइनर प्रदर्शन और वर्ष की जानकारी के साथ उन्हें लेबल करें।
6. दृश्यों को शीटों/नोटबुक में चिपकाएं।
7. उसे शिक्षक को प्रस्तुत करें।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. क्या परिधानों पर युद्ध का प्रभाव एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है अथवा यह आधुनिक परिधानों पर अभिव्यक्त प्राप्त करना अभी तक जारी रखे हुए है?
2. किस रूप में युद्ध की वर्दियों द्वारा प्रेरित फैशन युगचेतना (जेटजीस्ट) का उदाहरण माना जा सकता है?

व्यावहारिक अभ्यास 13

उद्देश्यः

1. भारतीय फैशन डिजाइनर की 'सिगनेचर (विशिष्ट) शैली' का पता लगाना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली/खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. फैशन पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

1. नवीनतम पत्रिकाओं अथवा इंटरनेट का अवलोकन करें तथा ऐसे डिजाइनर की पहचान करें जिसे डिजाइन के सौंदर्यबोध ने आपको प्रभावित किया है।
2. सिलुएट/कट, वस्त्र, एतहीय सजावट, रंग पैलेट वरीयता आदि के संदर्भ में डिजाइनर की विशेषता/विशिष्ट शैली का विश्लेषण करें।
3. नवीनतम पत्रिकाओं अथवा इंटरनेट से, इसके पिछले 2–3 वर्षों में संग्रहण के चित्रों को संग्रहित करें।
4. निम्न विवरणों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखते हुए एक नोटबुक में कालक्रमानुसार चित्रों को संकलित और प्रस्तुत करें:
   - i. डिजाइनर का नाम
   - ii. लेबल का नाम
   - iii. दृश्यमान पहचान योग्य विशिष्ट शैली
   - iv. वे स्टोर जहां से डिजाइन विक्रय किए जाते हैं।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. स्थापित फैशन डिजाइनरों की अपनी विशिष्ट शैलियां किस प्रकार होती हैं?

व्यावहारिक अभ्यास 14

उद्देश्य:

1. इस बात की विश्लेषणीय समझ विकसित करना कि ऐतिहासिक परिधान पारंपरिक भारतीय वस्त्रों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
2. पारंपरिक भारतीय वेशभूषा के संदर्भ में फैशन के ट्रिकल–एक्रॉस सिद्धांत को समझने में समर्थ बनाना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली / खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. फैशन पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

1. परिधानों के विवरणों पर ध्यान केन्द्रित करने वाली पारंपरिक भारतीय परिधानों के संबंध में पुस्तकों (ग्रंथ सूची देखें) पत्रिकाओं और इंटरनेट का अवलोकन करें।
2. महिलाओं और / अथवा पुरुषों के लिए किसी एक पारपंरिक परिधान (अर्थात् चोली–ब्लाउज, अनारकली कुरता, अंगरखा, सलवार, चूड़ीदार साड़ी आदि) के चित्र एकत्र करें।
3. सिलुएट, वस्त्र और सतहीय सजावट के संदर्भ में पोशाकों के विवरणों का विश्लेषण करें।
4. पत्रिकाओं और इंटरनेट से, भारतीय पारंपरिक पोशाक से प्रेरित समकालीन फैशन परिधानों के 5 चित्र एकत्र करें।
5. प्रत्येक चित्र को निम्नलिखित विवरणों के साथ लेबल करेंः–

   I डिजाइनर / ब्रांड का नाम

   ii. मौसम

   iii. मूल्य (ऐच्छिक)
6. इन चित्रों को कालक्रमानुसार नोट बुक में संकलित करें और प्रस्तुत करें।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. ऐतिहासिक पोशाकें विभिन्न उपभोक्ता वर्गों के मध्य पारंपरिक परिधानों के लिए प्रेरणा का स्रोत किस प्रकार है?

व्यावहारिक अभ्यास 15

उद्देश्य:

1. पोशाकों के लिए ऐतिहासिक संदर्भ के स्रोत के रूप में चयनित फिल्मों का प्रयोग करना।
2. फैशन ट्रेंडों के एक स्रोत के रूप में फिल्मों की पहचान करना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली / खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. फैशन पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

शिक्षण निम्नलिखित कार्य करेंगे:

1. निम्नलिखित मानदण्डों के आधारपर कुछ फिल्मों पर चर्चा करें:
   - ऐसी फिल्मं जिनमें परिधानों ने भारत में फैशन को आरंभ किया।
   - ऐसी फिल्में जिनमें परिधानों को प्रमाणिक अनुसंधान के पश्चात् डिजाइन किया गया।
   - ऐसी फिल्में जिन्होंने श्रेष्ठ परिधान के लिए राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं।
2. फिल्म के चयनित दृश्यों की पावर प्वाइंट प्रस्तुति (पीपीटी) के माध्यम से पोशाकों पर चर्चा करें।
3. इस बात पर चर्चा करें कि क्या इन फिल्मों के परिधान डिजाइनर फैशन डिजाइनर भी हैं।

छात्र निम्नलिखित कार्य करेंगे:

1. उपर्युक्त मानदण्डों के आधार पर एक ऐसे फिल्म की पहचान जिसे उन्होंने पहले देखा है।
2. फिल्म की पुनः समीक्षा करें तथा पोशाकों और उपांगों के विवरणों का विश्लेषण करें।
3. पुरानी / नई पत्रिकाओं अथवा इंटरनेट से ऐसे दृश्य ढूंढे जो समाज में इन डिजाइनों की लोकप्रियता और प्रसार को दर्शाते हों।
4. इन दृश्यों को नोटबुक में इस प्रकार से संकलित करें जिससे यह प्रदर्शित हो कि किस प्रकार मूल पोशाक ने वाणिज्यिक डिजाइनों को प्रेरित किया है।

प्रेक्षण और चर्चा :

1. क्या फिल्मों की वाणिज्यिक सफलता पोशाकों की लोकप्रियता को प्रभावित करती है?
2. क्या कलाकारों का 'स्टार स्टेटस' पोशाकों की लोप्रियता को प्रभावित करती है?
3. क्या फिल्म परिधानों से प्रेरित फैशन समाज में प्रचारित–प्रसारित होता है?

इकाई–IV

व्यावहारिक अभ्यास 16

उद्देश्य:

1. फैशन ट्रेंडों के लिए सूचना के स्रोत के रूप में प्रिंट मीडिया के प्रयोग को समझना।
2. मीडिया कवरेज और रिपोर्टों के माध्यम से मौसम के लिए पूर्वानुमानित नवीनतम फैशन ट्रेंडों की पहचान करने में समर्थ होना।
3. डिजाइनरों द्वारा डिजाइन निर्वचन में समानताओं और विभेदों की दृश्यमान रूप से पहचान करना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली/खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. फैशन पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

अभ्यास से पूर्व, शिक्षकों को निम्नलिखित कार्य करने चाहिए:

1. छात्रों को भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय फैशन पत्रिकाओं के नामों से परिचित कराना।
2. पिछले एक वर्ष में समाचारपत्रों तथा भारतीय पत्रिकाओं में सूचित किए गए वैश्विक फैशन ट्रेंडों पर लेखों और फोटोग्राफों की पहचान करना।
3. भारतीय और/अथवा अंतर्राष्ट्रीय रनवे शो से संग्रहणों के फोटोग्राफों के आधार पर प्रमुख ट्रेंडों पर चर्चा करना।

छात्र निम्नलिखित कार्य करेंगे:

1. मीडिया द्वारा रिपोर्ट किए गए किसी प्रमुख ट्रेंड का चयन।
2. मुख्य ट्रेंड के आधार पर परिधानों अथवा फैशन उपांगों/उत्पादों (जैसे घड़ियां, बैग, जूते) के दृश्यों की पहचान करना।
3. सिलुएट, सामग्री, रंग, प्रिंट, तंतु–विन्यास (जो लागू हो) के विवरणों का अध्ययन करना।
4. विभिन्न ऐसी पत्रिकाओं से चित्र काटना जो विभिन्न डिजाइनरों/ब्रांडों द्वारा समान ट्रेंड की डिजाइन विविधताओं को दर्शाते हैं।
5. एक संक्षिप्त टिप्पणी के साथ एक स्क्रैप बुक में चित्रों को चिपकाना कि डिजाइनर/ब्रांड एक ही ट्रैंड को विभिन्न प्रकार से किस प्रकार निर्वाचित करते हैं।

प्रेक्षण और चर्चा:

1. क्या डिजाइनरों द्वारा उनके प्रदर्शनों में प्रस्तुत फैशन ट्रेंडो में कोई समानताएं हैं?
2. क्या ये डिजाइन इस समय भारतीय स्टोरों पर उपलब्ध हैं?
3. क्या डिजाइन पूर्वानुमानित ट्रेंडों के समान हैं अथवा उनसे भिन्न? क्या वे रनवे पर डिजाइनों की तुलना में अधिक व्यावसायिक (पहनने योग्य/व्यावहारिक) हैं?

व्यावहारिक अभ्यास 17

उद्देश्य:

1. छात्रों को फैशन चक्र से संबंधित सिद्धांत समझने में समर्थ बनाना।
2. विश्लेषण–आधारित अभ्यास के माध्यम से सिद्धांत का वर्णन करना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली / खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. फैशन पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

1. बीसवीं शताब्दी में किसी दशक पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ पुस्तकों, पत्रिकाओं और इंटरनेट का अवलोकन करें (अर्थात् 1920 के दशक का जैज़ युग, द्वितीय विश्व युद्ध की अवधि, 1960 के दशक का हिप्पी युग, 1980 के दशक की पावर–ड्रेसिंग आदि)।
2. चयनित दशक की घटनाओं तथा समग्र 'रूपरेखा' के लेख और फोटोग्राफ ढूंढे अर्थात् कला, वास्तुकला, कार, फर्नीचर और अन्य जीवन–शैली उत्पाद।
3. परिधानों (वस्त्र, सिलुएट, रंग और प्रिंट) तथा उपांगों (घड़िया, बैग, जूते) के विवरणों पर ध्यान केन्द्रित करें।
4. ऐसे भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय रनवे शो (पिछले तीन वर्षों के भीतर) के दृश्यों का पता लगाएं जिनमें कलेक्शन पूर्व दशक से प्रभावित हों परंतु उन्हें पुनर्संयोजित करते हुए नया बनाया गया हो।
5. डिजाइनरों, शो के स्थान तथा वर्ष के बारे में जानकारी के साथ दृश्यों को लेबल करें।
6. प्रमुख विशेषताओं में समानता तथा डिजाइन में अंतरों को सहसंबद्ध करते हुए उन दृश्यों को शीटों / नोटबुक में चिपकाएं।
7. फैशन चक्र (अर्थात् चक्र के भीतर चक्र, आवर्ती चक्र) का विश्लेषण करते हुए एक टिप्पणी लिखिए।
8. शेष कक्षा के लिए एक प्रस्तुतीकरण बनाइए।

प्रेक्षण और चर्चा:

फैशन उद्योग के लिए फैशन चक्र से संबंधित सिद्धांतों की प्रासंगिकता क्या है?

व्यावहारिक अभ्यास 18

उद्देश्यः

1. स्थानीय बाजार के क्षेत्रीय दौरे के माध्यम से छात्रों के लिए प्रयोगात्मक शिक्षण का अवसर प्रदान करना।
2. डिजाइन ट्रेंडों तथा उपभोक्ताओं की वरीयता को समझने के साधन के रूप में स्थानीय बाजार सर्वेक्षण के महत्व को समझने में समर्थ बनाना।
3. त्वरित रेखाचित्रों और/अथवा फोटोग्राफी के माध्यम से नवीनतम, फैशन ट्रेंडों पर ध्यान देने तथा उन्हें रिकार्ड करने की आदत विकसित करना।

अपेक्षित सामग्री :

1. नोट बुक
2. पेन, पेंसिल

कार्य विधि :

1. शिक्षक क्षेत्र में एक स्थानीय बाजार अथवा मेले की पहचान करेंगे। वे चयनित बाजार में दुकानों तथा वस्तुओं की प्रकृति से परिचित होने चाहिए।
2. छात्रों को अभ्यास के उद्देश्यों तथा विधि की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की जाएगी।
3. शिक्षा मार्गदर्शन और अनुवीक्षण के लिए बाजार दौरे के समय छात्रों के साथ रहेंगे।
4. जबकि बाजार का दौरा सामान्य ट्रेंडों को देखने और उन्हें रिकार्ड करने का अवसर प्रदान करेगा, कक्षा को परिधानों, जूतों तथा अन्य उपांगों में ट्रेंडों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसमें शामिल होगाः
   - I संक्षिप्त टिप्पणियां
   - ii. त्वरित रेखाचित्र और/अथवा फोटोग्राफ
5. शिक्षक को प्रस्तुत करने के लिए जानकारी को संकलित करें शीट/नोटबुक में प्रस्तुत करें।
6. समस्त कक्षा के साथ अनुभव और सूचना को बांटे।

प्रेक्षण और चर्चाः

1. क्षेत्रीय दौरे/बाजार दौरे किस प्रकार से दुकानों/स्टॉलों पर प्रदर्शित विभिन्न उत्पादों के बारे में सीखने में सहायता प्रदान करते हैं?
2. क्या क्षेत्रीय दौरे/बाजार दौरे प्रयोगात्मक शिक्षण के साथ कक्षा में पूर्व में सीखी गई डिजाइन और फैशन ट्रेंडों की जानकारी को सहसंबद्ध करने में सहायता प्रदान करते हैं?
3. क्या कक्षा में अनुभव की साझेदारी सहयोगपूर्ण शिक्षण सृजित करती हैं?

व्यावहारिक अभ्यास 19

उद्देश्य:

1. फैशन पूर्वानुमान के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में पेंडुलम स्विंग पर ध्यान केन्द्रित करना।

अपेक्षित सामग्री :

1. बिना लाइनों वाली / खाली स्केच बुक (ए3)।
2. कैंची, ग्लू।
3. फैशन पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

1. 1. जनसंख्या के एक विशाल भाग द्वारा पहने जाने वाले किसी भारतीय अथवा पश्चिमी परिधान की एक मद का चयन करें (जैसे जीन्स, सलवार–कमी, साड़ी आदि)।
2. ऐसे भारतीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय शो (2–5 पांच वर्ष के भीतर के चित्रों का) पता लाने के लिए पत्रिकाओं तथा इंटरनेट का अवलोकन करें जिनमें परिधान की इस मद को प्रदर्शित किया गया हो।
3. इसकी प्रमुख विशेषताओं की पहचान करने के लिए कट, फिट, वस्त्र, रंग, प्रिंट के संदर्भ में परिधान की इस मद की डिजाइन विविधताओं पर ध्यान केन्द्रित करें।
4. पिछले 2–5 वर्षों के दौरान इस परिधान में हुए परिवर्तनों को दर्ज करने के लिए इसके चित्रों को ढूंढे।
5. पेंडुलम स्विंग का विश्लेषण करने के लिए चित्रों के साथ एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।
6. कक्षा के लिए एक प्रस्तुतीकरण तैयार करें।

प्रेक्षण और चर्चा:

1. फैशन उद्योग के लिए पेंडुलम स्विंग सिद्धांत की प्रासंगिकता क्या हैं?

व्यावहारिक अभ्यास 20

उद्देश्यः

1. कला शिल्प और डिजाइन के बीच संबंधों को समझने में समर्थ होना।

अपेक्षित सामग्री :

1. नोटबुक
2. पेन, पेंसिल।
3. पत्रिकाएं।

कार्य विधि :

1. ऐसी किसी पेंटिंग के चित्र की पहचान करें जो आपको आकर्षित करती हो। उन रेखाओं, स्वरूप, रंगों, तंतु–विन्यास, मोटिफो का विश्लेषण करें जो इस कलात्मक कार्य की विशेषता है।
2. उस कलाकार का पता लगाएं जिसने इसे सृजित किया है तथा उसकी शैली के बारे में भी जानें।
3. 1–2 हस्तशिल्प उत्पादों के चित्र प्राप्त करने के लिए पत्रिकाओं और इंटरनेट का अवलोकन करें जिसकी चुनी गई पेंटिंग के समान ही विशेषताएं हैं। शिक्षक के साथ चर्चा करं कि क्या वह उत्पादन उस कलात्मक कार्य द्वारा प्रेरित है अथवा शिल्पकारी/राज्य की पारंपरिक शैली से संबधित है।
4. 1–3 परिधान डिजाइनों के चित्रों की पहचान करें जिनमें कला अथवा शिल्प केसमान ही कुछ समानताएं हैं। यह पंक्ति, संरचना, रंग, तंतु–विन्यास, मोटिफ, बंधकों आदि के संदर्भ में हो सकती है (उदाहरण के लिए सेफ्टी पिन/धागे/रिवेट्स आदि)।
5. कला, शिल्प, शिल्प उत्पाद तथा परिधान डिजाइन के चित्र चिपकाएं तथा उनकी समानताओं और अंतरों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

प्रेक्षण और चर्चा:

1. कला, शिल्प और डिजाइन के बीच समानताएं और अंतर क्या हैं?
2. क्या शिल्प और डिजाइन कला द्वारा प्रेरित हो सकते हैं?